विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस पर आयोजित विचार गोष्ठी में दी छात्रों को जानकारी|
देश की एकता एवं विविधता के संरक्षण का उत्तरदायित्व युवा पीढ़ी के कंधे पर है- डॉ राजेश किशोर त्रिपाठी

बकेवर,इटावा | आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत स्वतंत्रता दिवस से पूर्व जनता कालेज बकेवर में विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका संचालन डॉ दिव्य ज्योति मिश्र, प्रभारी सांस्कृतिक कार्यक्रम ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय परिवार के छात्र-छात्राओं , शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों ने प्रतिभाग किया और सभी ने अपने विचार व्यक्त किए। छात्रों द्वारा विभाजन में हुए नरसंहार, भुखमरी एवं अव्यवस्थाओं के बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ राजेश किशोर त्रिपाठी ने विभाजन में शोषित शरणार्थियों के संदर्भ से उनके साथ हुई यातनाओं को विस्तार से छात्रों एवं कॉलेज परिवार के समक्ष प्रस्तुत किया , डॉ त्रिपाठी ने सभी से आग्रह किया कि आप सभी देश का भविष्य हो,आपको ही इस देश की एकता एवं विविधता का संरक्षण करना है। देश की परंपरा जो विविधता में एकता की है, उसे सृष्टि के अंत तक निरंतर रखना है।

मातृभूमि की अखंडता को सर्वोपरि बताते हुए डॉ त्रिपाठी ने विभाजन की त्रासदी को याद करते हुए इसे भारतीय इतिहास का सबसे पीड़ादायक क्षण बताया। उन्होंने कहा कि इस दौरान न केवल भारतीय इतिहास में बल्कि वैश्विक इतिहास में अब तक का सबसे बड़ा मानवीय प्रवासन हुआ। इसमें अनगिनत जानें गईं एवं लाखों लोगों की पहचान चली गईं। इस विभीषिका की व्यथा से सीख लेने की बात करते हुए यह कहा कि मातृभूमि की अखंडता सर्वोपरि है।

श्री कुलदीप अवस्थी ने अपने उद्बोधन में कहा कि देश में विभाजनकारी ताकतों से मुकाबला यदि करना है तो हमें विभाजन की त्रासदी को याद करना होगा। आजादी की खुशी ऐसी ना हो कि हम उसमें खो जाएँ और जो खोया हुआ है उसे भूल ना जाएं|

श्री अश्वनी कुमार मिश्र ने कहा कि देश के बंटवारे के दर्द को कभी भुलाया नहीं जा सकता। नफरत और हिंसा की वजह से हमारे लाखों बहनों और भाइयों को विस्थापित होना पड़ा और अपनी जान तक गंवानी पड़ी। उन लोगों के संघर्ष और बलिदान की याद में 14 अगस्त को 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के तौर पर मनाने का निर्णय लिया गया है। सांस्कृतिक कार्यक्रम संयोजक डॉ दिव्य ज्योति मिश्र ने कहा कि यह दिन हमें भेदभाव , वैमनस्य और दुर्भावना के जहर को खत्म करने के लिए न केवल प्रेरित करेगा , बल्कि इससे एकता, सामाजिक सद्भाव और मानवीय संवेदनाएं भी मजबूत होंगी|

कार्यक्रम संयोजक डॉ प्रकाश दुबे ने कहा कि

देश के बंटवारे के दर्द को कभी भुलाया नहीं जा सकता। नफरत और हिंसा की वजह से हमारे लाखों बहनों और भाइयों को विस्थापित होना पड़ा और अपनी जान तक गंवानी पड़ी। उन लोगों के संघर्ष और बलिदान की याद में 14 अगस्त को 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के तौर पर मनाने का निर्णय लिया गया है।

कार्यक्रम में डॉ धर्मेंद्र कुमार, कार्यालय अधीक्षक श्री कोमल सिंह, पुस्तकालय कैटलॉगर अरविंद कुमार चौधरी, आकाश चौधरी, पवन कुमार सक्सेना, अनुज कठेरिया, देवेश चतुर्वेदी, अजय कुमार शर्मा आदि की उपस्थिति एवं सहयोग रहा| कार्यक्रम संयोजक डॉ प्रकाश दुबे ने सभी का आभार व्यक्त किया|

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस
सांस्कृतिक कार्यक्रम

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस
सांस्कृतिक कार्यक्रम

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस
सांस्कृतिक कार्यक्रम